Sixteenth Loksabha

an>

Title: Regarding alleged political killings in Kerala.

श्रीमती मीनाक्षी लेखी (नई दिल्ली) : महोदया, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहती हूं। मेरा विषय भी प्रह्लाद जी के विषय से ही जुड़ा हुआ है। मैं कुछ नाम यहां पढ़ने जा रही हूं - प्रमोद, रामचन्द्रन, विनीष, विष्णु, रमित, अनिल कुमार, राधाकृष्णन, विमला, संतोष, निर्मल, रवीन्द्रनाथ, सुजीत, बीजू और राजेश। ये नाम किसी को समझ में नहीं आएंगे, लेकिन जैसे ही मैं टीलू पहलवान या अख्लाक़ बोलूंगी तो सभी को सुनायी देगा। कारण यह है कि ये 14 नाम उन लोगों के हैं, जिन लोगों की केरल में राजनैतिक हत्या की गयी और इन 14 नामों को कोई पहचानता भी नहीं है।...(व्यवधान) जो लोग लगातार इनटॉलरेंस पर भाषण देते हैं, जो लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं की बात करते हैं, वे लोकतंत्र में दूसरी विचारधारा के लोगों को बर्दाश्त नहीं करते हैं... (व्यवधान) ये 14 नाम उन लोगों के हैं, जहां पर सात बच्चों पर अटैक किया गया। अगर पिता घर पर नहीं था तो सात साल के बच्चे की बाजू तलवार से काटी गयी।...(व्यवधान) मेरी आंखों के सामने वे चेहरे आते हैं, विमला, जिसको जलाकर मार दिया गया, उसके दो बच्चे अश्विथी और अश्विन के चेहरे सामने आते हैं...(व्यवधान) राधाकृष्णन उन्हीं के जेठ लगते हैं, उनके दो बच्चे अरुण और ऐसे ही एक लड़की जिसको "सैल मी दी आँसर " करके वहां की सेलिब्रिटी बनी विस्मया के पिता संतोख़ की क्रूरता से हत्या की गयी। "सैल मी दी आँसर " में मार्क्सस्ट पार्टी के जो एमएलए हैं, उन्होंने यह प्रश्न किया और उस बच्चीं से बात कर रहे हैं, वह बहुत ही ब्रिलिएंट बच्ची है। कहा जाता है कि विस्मया को किसी भाई ने च्यूंटी क्यों मारी? तो कहा कि वह गुड़िया मुझे चाहिए थी इसलिए च्यूंटी मारी और उसकी गुड़िया छीन ली। माँ कहती है कि जिंदगी लेने और देने पर ही व्यवस्थित है, इसलिए मैंने उसको च्यूंटी मारी और गुड़िया ले ली। इसी प्रकार से वहां की सरकार के जो लोग हैं, उन्होंने उस लड़की को एक सेलेब्रिटी तो बनाया, लेकिन उसके पिता को उससे छीन लिया और उसके सामने उसकी क्रूर हत्या कर दी। राजेश नाम के एक व्यक्ति के बारे में अगर मैं आपको बताऊंगी तो आप लोग हैरान होंगे कि उसके शरीर पर पैने हथियार के 80 जख्म थे। उसका हाथ काटकर फैंक दिया गया था। यह दो दिन पहले का नृशंस हत्याकांड है। उस हत्या को याद करते ही जयकृख्णन मास्टर, चंद्रशेखरन इत्यादि की सभी हत्याएं याद आती हैं, जिनको क्रूरता और तालीबानी स्टाइल में मारा गया।लगातार आई.एस.आई.एस. में शामिल होने वाले अधिकतर लोग इसी राज्य से आते हैं। आपको यह जानकर हैरानी होगी ये केवल आर.एस.एस. और बी.जे.पी. का मुद्दा नहीं है। कन्नूर जैसी कुख्यात जगह पर कांग्रेस के 40 वर्कर्स को मारा गया, मुस्लिम लीग के 7 वर्कर्स को मारा गया, एस.डी.पी.आई. के 3 वर्कर्स को मारा गया है। जो रोहित वेमूला की आत्महत्या को हत्याकांड बनाना चाहते हैं, मैं उन्हीं को आज याद दिलाना चाहती हूं कि वहां पर सबसे अधिक 51 महिलाओं के ऊपर आपराधिक घटनाएं घटीं, जिनमें दलित महिलाएं शामिल थीं। मैं जिन 14 हत्याओं की बात कर रही हूं, 14 में से 4 दलित हैं। ये नहीं चाहते कि दूसरे कोई रामनाथ कोविंद पैदा हों, क्योंकि पॉलित ब्यूरो में एक भी दलित नहीं है। लगातार जो आज God's own country है, वह आज Godforsaken country बनी हुई है, क्योंकि लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के खिलाफ ये किसी को नहीं खड़े होने देना चाहते हैं।

अध्यक्ष जी, मैं तीन-चार नाम जरूर लेना चाहती हूं।...(व्यवधान) कि दामोदरन, इन्होंने अपने ही लोगों को मारा। सी.पी.एम. के लोगों ने सी.पी.आई. के लोगों को मारा, इन्होंने काँग्रेस के लोगों को मारा, लेकिन मुझे जो बात

समझ नहीं आती वह यह कि जब भारतीय जनता पार्टी के लोग मारे जाते हैं तो हम कम से कम आवाज तो उठाते हैं बाकी लोग राजनीतिक ख़डयंत्रों के कारण चुप कैसे रहते हैं, अपनों को मरता हुआ कैसे देखते हैं। लोकतंत्र के अंदर राजनीतिक मतभेद हो सकता है लेकिन राजनीतिक मतभेद लोगों को मारने के लिए नहीं हो सकता। किसी को मार कर हत्या करने का अधिकार नहीं देता। इस संसद के माध्यम से मैं ... * की बात याद दिलाना चाहती हूं जो संसद सदस्य रहे हैं। ...* के मुताबिक पिनरई विजयन ने, जब वे वर्ष 2008 में अपनी पार्टी के जनरल सेक्रेट्री थे, ऐसा बयान दिया और कहा कि कन्नूर मॉडल बहुत विध्वंसक है, बंगाल मॉडल फॉलो किया जाना चाहिए। मैं एम.एम. मणि की याद दिलाना चाहती हूं, जिनको एक-दो-तीन मणि कहा जाता है, क्योंकि तीन जयराजन जैसे लोग जो आज कन्नूर से हटकर त्रिवेंद्रम चले गए है और त्रिवेंद्रम के अंदर ये हत्याएं हो रही हैं।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : बैठ जाइए, समय पूरा हो गया।

…(व्यवधान)

श्रीमती मीनाक्षी लेखी : अध्यक्षा जी, एक लाइन बोलना चाहती हूं।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र अग्रवाल, श्री हरिओम सिंह राठौड़, कुमारी शोभा कारान्दलाजे, श्री अनुराग सिंह ठाकुर, श्री भैरों प्रसाद मिश्र, डॉ. मनोज राजोरिया, श्री सुमेधानन्द सरस्वती, श्री ओम बिरला, श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, श्री अजय मिश्रा टेनी, प्रो. रिचर्ड हे, श्री नलीन कुमार कटील, श्री कारादी सनगन्ना अमरप्पा, श्री सुरेश सी. अंगड़ी और श्री सुधीर गुप्ता को श्रीमती मीनाक्षी लेखी द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।